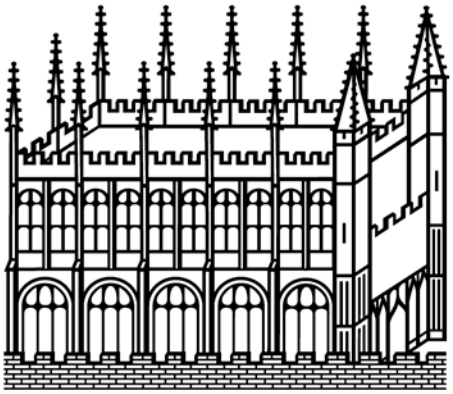

Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi Dubn. 1

13.C.65.

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Svapnaprakāśa.

Supan perkash

स्वप्नप्रकाश ॥

श्रीमत्सीतारामचन्द्र कमलकेभ्रमर श्रीमद्रा-
राजकुमार रसिकराम किशोर शरण
बाबू नन्दकिशोर दुबेरचित

जिसमें

श्रीलड़ैतीलाल जनकनन्दनी दशरथराजकुमार
परमरसखानके स्वप्नप्रकाशकी लीलावर्णनहै

भक्त जनोंके आनन्द बिलास हेत

लखनऊ

मुंशीनवल किशोरके यंत्रालयमें शुद्धता पूर्व्वकछपा
अप्रैलसन् १८८४ ई०

श्रीगणेशायनमः॥

स्वप्नप्रकाश॥

सोरठा॥

सीताराम उदार भरत लषण रिपुदमन वर॥
मम उर करहुबिहार सर्वसुखदफलभक्तिकर १

दोहा॥

शहर जौनपुर अवध को प्रथम द्वार अभिराम॥
बसत बर्ण चारिउजहां परिपूरित मन काम १
जन्मभूमि अति सुखद तहँ प्रकट्यो नंदकिशोर॥
करुणा करि संतन दई राम भक्ति बर जोर २
संसकार गुरुवर दयो नर्म सख्य को भाव॥
ताते निशि बासर रहै मनमें पूरो चाव ३
सीताबर की कृपाते काशी पति पद पास॥
राम नगर निज कुलसहित पायो परम सुपास ४
उत्रायन रवि फालगुन कृष्ण अष्टमी मान॥
वेद चंद्र रस ब्रह्म लखि विक्रम साल सुजान ५
ग्रंथ भावना श्रवण करि परमानंद प्रकाश॥
पंची कृत माता तज्यो असी घाट सुखरास ६
प्रेतकृत्य करि वेद विधि भयो असित बहु शोक॥
तबै देखायो स्वप्न में राघव लीला थोक ७

मातु अनुग्रह सों लख्यो अति अद्भुत सुख रास॥
महलन की लीला ललित ताको करों प्रकाश ८
शहर पनाही भीत बड़ि फाटक मणिकी सोह॥
जड़े बड़े तरु हीरके देखतही मन मोह ९
गुल बूटे मणि नीलके तामें बहु अश्लोक॥
रघुबंशिन के सुयश की लिखी बकाई नोक १०
नवो खंड को उच्च जहँ फाटक पुष्ट प्रकाश॥
तहां सवारी बाजि गज रथ सुख यान निवास ११

मधुभारछन्द॥

मातेमतंग।हौदेसुरंग॥भल फ़ीलवान। गुणके निधान१
खासेतुरंग।भारीउमंग॥मणिजड़ितसाजि।रघुराजबाजि२
दो० लसत सवार किशोरवय प्यादे काम समान॥
रसमय वर नौबतझरत फाटकशोभाखान १२
तहां मिलेमोहिं कृपा करि चारुशील हनुमान॥
तिनकेसंग स्वश्रयधरि भीतरकीन पयान १३
देखतचल्योमहलकीपांती। दिनकरमंदलखतजेहिकांती॥
सप्तावरणमहलइक देखा। मणिजड़ाव कुंदनकीरेखा १
दो० जानिखास निजमहल तें श्रीसियरामकृपाल॥
प्रबिशिबंधुहियचरितकरिमोकहँकियोनिहाल१४
लख्योंलषणलाड़िलेसोहाये। कियोंप्रणाममनोरथपाये॥
उठिदेअंकमालकरिआदर। बैठायोसमीपनिजसादर२
गांधर्बीकोनृत्यसोहायो। मसनदढिगबैठारि देखायो॥
प्रभु किश्ती अनेकमँगवाई। भूषणबसनदेखिमनभाई ३
निजकरक्रीटमुकुटशिरधरेऊ। दासनजुलुफ़अतरसोंभरेऊ

तुर्रा अरुशिर पेचकलंगी। कुंडलयुतअति प्रेमउमंगी४

दोहा॥

गोपगुंज मणि मालदिय नव रतननि छबिछाय॥
मनु नवग्रह बसि कंठउर चहत सिफारसिराय १५
नव निधि अङ्कन सों अधिकमणि कंकन करदीन॥
जिनहिं निरखिदिगपतिनकोलगतिसाहिबीक्षीन१६
दई अँगूठी बिविध बिधि सुअनूठी अनमोल॥
बने पने आदिक रतन अतन यतन युतकोल १७
पहुंचो मति पहुंची न जहँ बिश्वकर्मनकीजत्र॥
छबिपहुंचीमणिगनिनइमि लजतसुरबिमुखतत्र १८
जरकसको जामा ललित गुखुरू बनत समेत॥
तापर पटुका जरकसी मुक्त छोर छबि देत १९
अंगद ताही भांतिके दियेउ उमंगद साजि॥
जगरमगरजिनकीमणिनकीन्ह्योभुजनिबिराजि २०
जर कस जामें परचमक उर मणिमाल बिभाव॥
कियो रतन दरियाव मोहिं रामदया दरियाव २१
ललित इजार इजारबंद मुक्ता गुच्छ ललाम॥
नक मुक्ता मुखचन्द्रमें गजमुक्तन की दाम २२
चमर छत्र व्यज्जन छड़ी रबि शशि मुखी समेत॥
नुकरा घोड़ा बांकुरा दीन्ह्यो करि अति हेत २३

सवैया॥

एकतोजातिदुबेद्विजराजसिपायुतमोहिंभजैकरिप्यारको
तीसरेनामवही इनको कलिमेंजोकरें हैंचरित्रअपारको।
चौथे सुनमंसखायेभयेप्रियशेषके आयवढ़ाय दुलारको।

धन्यहैंरामगरीबनेवाजकियोअपनी समनन्दकुमारको १
सो० हर्षिकह्यो सुखधाम चारुशीलके बचनसुनि ॥
गुणमणि पूरण काम भे करुणा ते रावरी २
दो० प्रियलीला सिय रामकिय निज माया विस्तार ॥
हुलसिहँसततिनपरजेमोहिंभ्रमिगनरामकुमार२४
चौ० मुशकी परभे आप सवारा । राजसाज सँगचले अपारा ॥ बातैंकरत हँसत इक संगा। देखि चढ़ैतीभरत उमंगा ५ सिंह पवरि ढिगकनक महलके। चाहिय सुर पतिजासु टहलके ॥ पहुँचे तहँ ते तजी सवारी । अगून कोबछड़ीकर धारी ६ ममकर धरिरचना देखलावत। बरणत शेष बुद्धिबिसरावत ॥ पंचावर्णमध्यछबिछाजत। बँगलाचित्र मणिनमय राजत ७ कोमलसुमन फरशतेहि माहीं । बिछे मखमली गुलुफस माहीं ॥ छत फानूश झाड़ अरु ऐना । बिश्वरूप जनु कहत बनै ना ८॥
दोहा ॥
झालर गज मुक्तान की कर गाहा पच रंग ॥
जगमगात बर चांदनी मसनद तकिया संग २५
ता ऊपर सीता सहित दशरथ राजकुमार ॥
सखा सखी मधि रूप धरि राजत जनुशृंगार २६
भक्तबछलता समुझि लखि भूली सुधि बुधि मोहि॥
धनिधनिधनिकहिमुखकमलरह्योंसुइकटकजोहि२७
किय जुहार महि माथ धरि बोलेव तबप्रतिहार ॥
रघुकुलकमल पतंगप्रभु लक्ष्मण करत जुहार २८
कृपा दृष्टि सन्मुख करो राजकुवँर सुख धाम ॥

नयो नर्म आयो इतैं हितै सु तासु प्रणाम २९

चौ० लषणलालकी ओर निहारी। मिले मोहिं प्रभु भरि अँकवारी॥ करिआदर निजढिग बैठायो। स्वागत पूछी पानपवायो ९ सीतहिफिरप्रणामकरवायो। करि अति क्षोभ निकट बैठायो॥ दरशनकरि जबचरण निहारे। भयोभाव बर्णतकबिहारे १० पुनि देखन लाग्यों दरबारा। बीरसाजरघुबीर निहारा॥ नचैंअप्सरानृत्य प्रबीना। गांधर्बीगावहिँ लै बीना ११ तिनकोरास लास सुखरासी। देखतहीचित बढ़ो हुलासी॥ तनघनश्याम मनोहर चारू। कोनहोतबश लखतशृंगारू १२ सूरज कोटि लजावन हारो। पुरट मणिनमय मुकुटसँवारो॥ सुरभित कुटिल श्यामघुंघुरारी। छूटिरहीं जुलफैं मन हारी १३ अर्द्धचन्द श्रीविन्दमनोहर। तिलकमिहींरेखा छबिसोहर॥ सो अबर्णिबाणी सुख खानी। स्वादअलौकिक सुनतसोहानी १४॥

दो० नैनमैन शर मन्द करि घायल कियो रसाल॥
मेचक बंक सुभौंहँ युग काम धनुषउरशाल ३०

चौ० कुंडल श्रवण फांस जनु डारैं। गोल कपोल रसिक बटपारैं॥ बिंबाधर नासा छबि नामिनि। दशन हँसनि दाड़िम कह दामिनि १५ सुरसंपति रसना रस खानी। चिबुक रसाल बदन बिधु मानी॥ कंबुग्रीव अस्कंध मनोहर। करिकरभुजभूषण युतसोहर १६ करअनुपम भूषण बरधारे। उर अमोल बनमाल सँवारे॥ उदर त्रिरेख त्रिबेनी मानो। नाभिभवँर कटिसिंह लजानो १७

ऊरूजघनसुचरन सुहाये। अनुरागिनिके मन ललचाये॥
धोती पीतपुनीत उपरना। शाल सनेह जाय नहिं बरना
१८ नख शिख छबि रघुबर की गायो। कह्यो यथामति
अंत न पायो॥ श्री सिय छबि फाँब किमि कह कोई।
कोटिन शशि रति रति उनहोंई १९॥
दो० बरभूषण बसनादि पुनि अनुपम राज समाज॥
दियेकृपाकरसजिकिय अमितइन्द्रशिरताज ३१
बूड़ेउँ छबि के सिंधु में लहेउं न वारापार॥
दखलायो बर नाट सुख निज समीप बैठार ३२
मधुभारछन्द॥
भा जी उमाह। निज रास चाह॥
और न उठाय। मन भरे चाय ३।
चौ० छरे छबीले छैला प्यारे। जरकसमय चीरा
शिरधारे॥ कोइ श्यामल कोइ गोर सलोने। कोइ
मुकुट मणि मण्डित सोने २० कोइ बांकदृग खंजन
वारे। जुलफैं छुटींकलंगी धारे॥ कुण्डल श्रवण कपो
लन झलकैं। बंकभौंह घुंघुरारी अलकैं २१ जामा
ललित इजार सहायो। जरकस को पटुका मनभायो॥
भुजमृणाल करकंज मनोहर। मणिमुक्ता माला अति
सोहर २२ चारुशील मणि सुखद सोहाये। लषणबीर
मणि हरिहित भाये॥ अरुसु छत्रमणि परम सलोने।
सिंहासन मतिसम नहिं होने २३ सुखदचंद्रमणि सिय
पियजीके। रुचिररसिक मणिप्रिय सबहीके॥ चंद्रभानु
मणि प्रभा अनूपा। तिमिसौंदर्य्य मणिहुं अनुरूपा २४

रसिक रूपमणि गुणमणि प्यारे। बहुरि शील मणि सुखद सँवारे॥ रसमणिधीर हीरमणि चारू। रचित रामहित चरित उदारू २५॥

दो० अंतरबाहेर को लखत अतिशय प्यारेनर्म॥
सखाशिरोमणिरामके इन सम धन्य न पर्म ३३
येसबसखास्नर्म हरि अति उदार सुख धाम॥
नर्म अंगऋजुबैस लखि लाजतकोटिनकाम ३४
नर्म मण्डली मध्य जब शोभित भे रघुराज॥
चंद चांदनी के तरे पहिरि नाटका साज ३५

भुजंगप्रयात छंद॥

सुजामा सज्यो तासुको पायजामा। पटूकादि वैसेसजी शोश सामा॥ मणीकी बनीहै घनी क्रांति जामें। मनो मंजु रत्ना करेंबासतामें १ सितारेमयी बांकुड़ी बेलि बांकी। तथा गोखरू किर्णकीझांकि झांकी॥ जगज्ज्योति माचो प्रभापुंज फैले। रच्योसूर्य औ चन्द्रको अंशलैलै २ अलंकार तापे सजे स्वर्ण वारे। नवो रत्नके यत्न के रंगधारे॥ प्रभानाथ कीशीतपालों निहारों। जहां कोटि कंदर्प की दर्पवारों ३ बिदेहात्म जाकी कहौं कान्ति कैस। नजीहा दृगी दृष्टिके जीह तैसे॥ रमा औ उमा ब्रह्म शक्त्यादि जोहैं। चकीसी जकीसी गुनै अब को हैं ४ सजी संगवारी सखी वृंदकेती। मनोसीयआनंत्यके बिंबहेती॥ तहांरामतेते तहां रूप ठान्यो। सु मायाकरी ना कोऊ भेद जान्यो ५ महानन्द के कन्दमें नर्मफूले। फुले फूल सौरभ्य के भृंगभूले॥ गहे हाथसोंहाथयों देत

फेरी। समा ताल मालादि सों नाद केरी ६ थकेसे छके से जकेनर्म ह्वेगे। महाब्रह्म आनन्दके रूपवेगे॥ बिमानी भये देविकवृन्दहर्षें। घनेमंजुमन्दारके पुष्प बर्षें ७॥

दोहा॥

रास चौकमें कमल यक दल सहस्र परमान॥
दलन सखा मधि कर्णिका सोहे रघुकुल भान ३६
चमर छत्र व्यजनादि सब सोज सखन के हाथ॥
मच्यो लास रस रास को देखन हार सनाथ ३७

चौ० नाच गान लखि बर्षें फूला। गति निहार सुरतियअनुकूला॥ इक इकके बिच राजिवनैना। मण्डल बांधि नचैं सह चैना २६ लगेंसोहावन पावन राती। सुख समाज नहिंबरणि सिराती॥ बजत मृदंग सरंगी बीना। बेनुरबाब सुखद स्वर झीना २७॥

दो० मिलि चौरासी सोहरैं चौरासी के खेद॥
रसनाके सुरनरनकी रसनाकिमिकह भेद ३८

चौ० सखीचारुशीला सुखदाई। बिमलाविमलबिनोद बढ़ाई॥ चारु सुशीला सुभगा न्यारी। अरु अहलाद सुशीला प्यारी २८ चन्द्रकला सब कला प्रबीना। सुखद प्रेम शीला आसीना। कमला नैन कमल छबिहरणी॥ सखी अनन्त मुख्य बसु बरणी २६ गहनि सोंज कर हँसनिसुबानी। सीय कृपा किमिकहौं बखानी॥ परमानंद अपनपौ भूले। सुखको स्वप्न लखैंअनुकूले ३० कोहम कहां बिसरि तन गयऊ। राघवकी शोभा मन लयऊ॥ ह्वै बलिहारि चरण शिर डार्‌यो। राघव गोद

स्वरूपनिहार्‌यो ३१ तहँतेचल महलको प्यारे। गज रथतुरँग अनेकसँवारे॥ चोबदारबल्लमबरदारा। करत शोर जागरे अपारा ३२ बोलनकीब गाव गुण गायक। आगेसरैं करैबहुपायक॥ तखतरवांपर नटीअलापैं। घटीदेखि निज सुरतिय तापैं ३३ राजकुमार छबीलेबांके। चंचलचारु तुरंगन हांके॥ श्याम करन बहुरंग अपारा। कौनभांतिकहि लहै सो पारा३४ हाथी हरिने मोर खेलौने। बारूदी छूटैं अतिलोने॥ भूचंपादि अनार छुटावैं। राजकुंवर तहँ अश्व कुदावैं ३५ फफकत फरक फुरकत आछ। चलेजातराघवके पाछे॥ मेले जाय बराबर बाजी। प्यारे की बातन भो राजी ३६ लषण लाल दहिनेकरिमुशकी। बातैंकरतआपनेरसकी॥ पहुंचेराजमहलकेद्वारे। दैडंका जागरे पुकारे ३७तीजी डेउढ़ीतजीसवारी। छठयेंनृपकीसभानिहारी॥गुरुबिप्रन कहँकीन प्रणामा। रघुबंशी वृद्धन सुखधामा ३८ भ्रात सखनयुत नृपपद परशे। देखिसमाज भूपमणिहरषे॥ शीशघ्राणकरि गोदबिठाई। माताकेढिग दीनपठाई ३९ देखिबदन जननी हरषानी। राईलोन उतार्‌यो पानी॥ मृदुबस्त्रनके फरश बिछायो। भाइसखन युत तहँ बैठायो ४० कंचन थारी व्यञ्जन नाना। परुसे भांति हिये हुलसाना॥ निजकरकमल खवावति माता। परम प्रेम पुलकावलि गाता४१ जबैकौलमम मुखमेंदीन्हा। अद्भुत स्वादपायसुखलीन्हा॥ राघवको जोरुचे प्रकारा। मोहिं सरहिनिजकर मुखडारा४२भयोंतृप्तअतिप्रेमअनन्दा।

अचवन पानपायसुखकंदा ॥ करिप्रणाम मातनकोनीके।
लहिअशीष मन भावन जीके ४३ चले आपने कनक
निकेता। अतरपानमोहिंआदरदेता ॥ शयन भवनतकगे
मोहिं लैकै। बिदाकीन अति आदर कैकै ४४करिप्रणाम
निजकुरी सँवारी। खास महलकी कर्योतयारी ॥ खुली
आंखिइतनेमें मोरी। लख्योंन अवधमनोहरखोरी४५॥

दोहा॥

बिरह दशा भइजागरण गुण बर्णन धृत हानि॥
गुणमणिनन्दकिशोरको रामदास दिय ज्ञान ३९
कृपारूप श्री जानकी दास प्रेम रस पीन॥
मेरे चित उद्वेग लखि कहि सुभावना दीन ४०
सोधन लहिकै धनी ह्वै करों प्रेम व्यापार॥
नफा गुरू की कृपाते घटी कर्म निज धार ४१
रसिकन के आनन्द हित कीन्हों स्वप्न प्रकाश॥
याते स्वप्न प्रकाशही नाम धरेउँ सुखरास ४२
उनइससै उनइस लखो बिक्रम बर्ष प्रमान॥
चैत्र सुदी एकादशी पूरो भो सुखखान ४३
अब सुबंशनिज लिखतहों जिनकी पुण्यसुभाय॥
मिललषणसियरामम्वहिं अबिरलभक्तिबढ़ाय४४
जो कोउ याको पढ़हिंअरु गुनहिंसुभक्ति सचेत॥
तेहि मिलिहैं सियरामसह अंशनि दयानिकेत४५

निज वंश॥

रोलाछंद॥

ख्यात दुबे जय राजमऊके कान्य कुब्जवर॥

सदा ब्रह्म पदलीन प्रज्ञ सोहत जगतीपर ॥
मोतीलाल दुबेन्द्र तनययुग नृपति धुर्मधर ।
सदानन्द शिवलालनामबर यशीजौ नपुर १
सदानन्दके उभयसुवन नृपनीति बखानी ।
बिज्ञबिदित भे रामदीन राजा शुचिदानी ॥
शिव सहाय सुत तासु भये बाबू बिज्ञानी ।
मणिकर्णिकाशरीरत्यागिलहिगतिमनमानी२
गुणमणिनन्दकिशोरतासुहरिजनगुणभाषे ।
रामचन्द्रपदकमल मधुप इवरसनितचाखे ॥
भक्तिअनूपम हित्त नित्त चित भे अभिलाषे ।
कथारसिक सतसंगसदा सज्जनको राख ३
दो० सदानन्दके लघु सुवन बाबू ठाकुरदीन ॥
ऋषिवतकाशीवासकरिभयेब्रह्मलयलीन४६

पृघटिकाछन्द ॥

रघुवर सहांय बाबूसुतासु । नितप्रतिव्रतकाशीसुबासु ॥
भेसुवनतासुयोध्याप्रसादलहिमुक्तिप्रागगुनिजगतबाद१
दो० इहां ढिठाई जानिकै निज कुलबर्णन कीन ॥
क्षमियोचूकबिचारिके बुधजनसंतप्रबीन ४७
पतितनकेउद्धार हित संतमही बिचरंत ॥
नमोनमो श्रीगुरुचरण महिमाजासुअनन्त ४८

इति ॥